

जब कानून विफल हो जाता है: परिवार, डर, और 7 अक्टूबर की जड़ें

9 जुलाई 2025 तक, इज़राइल-फिलिस्तीनी संघर्ष राज्य की जवाबदेही की कमी और अंतरराष्ट्रीय निष्क्रियता के परिणामों का एक गंभीर प्रमाण है। इस जवाबदेही के अभाव में, हताशा भरे कार्य सामने आए हैं—ऐसे कार्य जो केवल विचारधारा से प्रेरित नहीं हैं, बल्कि परिवार की रक्षा करने की मूलभूत प्रवृत्ति से प्रेरित हैं। इज़राइल का व्यापक रूप से प्रशासकीय नजरबंदी का उपयोग, जिसमें प्रलेखित यातनाएं और बच्चों के साथ दुर्व्यवहार शामिल हैं, अंतरराष्ट्रीय कानून का प्रत्यक्ष उल्लंघन करता रहता है। फिर भी, अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने इसे रोकने के लिए बहुत कम किया है। यह निबंध तर्क देता है कि 7 अक्टूबर 2023 के अपहरण—जब 251 व्यक्तियों को गाजा ले जाया गया—यादृच्छिक अत्याचार नहीं थे, बल्कि व्यवस्थित अन्याय का एक अनुमानित परिणाम थे। ये एक ऐसी मनोवैज्ञानिक और राजनीतिक वास्तविकता से उभरे जिसमें कानून ने कोई सुरक्षा प्रदान नहीं की, और हताशा एक हथियार बन गई।

हालांकि इन गैर-कानूनी कार्यों को मंजूरी नहीं दी जाती, लेकिन उनकी जड़ों को समझने के लिए पूरे संदर्भ की जांच आवश्यक है: एक कानूनी प्रणाली जो दमन के लिए बनाई गई है, एक अंतरराष्ट्रीय समुदाय जो हस्तक्षेप करने को अनिच्छुक है, और सामूहिक नजरबंदी और दुर्व्यवहार से प्रेरित एक सार्वभौमिक माता-पिता की प्रवृत्ति। जैसा कि 1997 की फिल्म **एक्जीक्यूटिव टारगेट** में नाटकीय रूप से चित्रित किया गया है, जिसमें एक व्यक्ति अपनी पत्नी को बचाने के लिए आतंकवादी साजिश में हिस्सा लेने के लिए मजबूर होता है, प्रियजनों के लिए खतरा पारंपरिक नैतिकता को पीछे छोड़ देता है। जब संस्थागत न्याय विफल हो जाता है, तो यह प्रवृत्ति एक स्पष्टीकरण और चेतावनी दोनों बन जाती है।

इज़राइल के कानूनी उल्लंघन: सामूहिक दंड के रूप में नजरबंदी

दशकों से, इज़राइल ने प्रशासकीय नजरबंदी का शासन बनाए रखा है, जो फिलिस्तीनियों को बिना किसी आरोप या मुकदमे के, अक्सर अनिश्चितकाल के लिए और गुप्त साक्ष्यों के आधार पर कैद करने की अनुमति देता है। ये प्रथाएं, जो 1967 से लागू हैं, चौथे जिनेवा सम्मेलन (अनुच्छेद 64-66) और नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतरराष्ट्रीय संधि (अनुच्छेद 9 और 14) का स्पष्ट उल्लंघन हैं।

2024 के मध्य तक, 9,500 से अधिक फिलिस्तीनी इज़राइली हिरासत में थे, जिनमें अक्टूबर 2023 से कम से कम 53 मौतें दर्ज की गईं—जिनमें से कई एमनेस्टी इंटरनेशनल के अनुसार यातनाओं से संबंधित थीं। 14 वर्ष की आयु के बच्चों को यौन अपमान, मारपीट, और मनोवैज्ञानिक दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा है। ये पृथक अत्यधिकता नहीं हैं; ये एक व्यवस्थित तंत्र की विशेषताएं हैं जो पूरी आबादी के खिलाफ नजरबंदी को हथियार बनाता है।

यह दमन, उत्पीड़न, और नियंत्रण की रणनीति 1979 के बंधक बनाए जाने के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में परिभाषित बंधक बनाए जाने से मिलती-जुलती है। सैन्य अदालतों में 99.7% दोषसिद्धि दर के साथ, कानूनी सहारा एक काल्पनिक कहानी है। इस संदर्भ में, फिलिस्तीनी परिवार कानून द्वारा संरक्षित नहीं हैं—वे इसके द्वारा सताए जाते हैं। कानूनी ढांचा स्वयं एक प्रभुत्व तंत्र बन गया है, जो उन ऐतिहासिक उदाहरणों को दोहराता है जहां राज्य कानून का उपयोग अत्याचारों को उचित ठहराने के लिए किया गया था जब तक कि इसे बाहरी ताकतों ने चुनौती नहीं दी।

अंतरराष्ट्रीय संलिप्तता: संरक्षण में विफलता

संयुक्त राष्ट्र निकायों, मानवाधिकार संगठनों, और अंतरराष्ट्रीय पर्यवेक्षकों से व्यापक प्रलेखन के बावजूद, विश्व ने कार्रवाई करने में असफलता दिखाई है। इज़राइल को उसके नजरबंदी शासन के लिए जवाबदेह ठहराने के लिए कोई सार्थक प्रतिबंध, अंतरराष्ट्रीय अभियोजन, या कूटनीतिक उपाय नहीं किए गए हैं। 2005 के संयुक्त राष्ट्र विश्व शिखर सम्मेलन में पुष्टि की गई

संरक्षण की जिम्मेदारी (R2P) अंतरराष्ट्रीय समुदाय को तब हस्तक्षेप करने के लिए बाध्य करती है जब राज्य मानवता के खिलाफ अपराधों को रोकने में विफल होते हैं। लेकिन इस मामले में, कार्यान्वयन अनुपस्थित रहा है।

2023 और 2025 के बीच युद्धविराम के माध्यम से मध्यस्थता किए गए कैदी आदान-प्रदान—विशेष रूप से 135 बंदियों की रिहाई—दिखाते हैं कि राजनीतिक इच्छाशक्ति परिणाम बदल सकती है। लेकिन ये क्षण उदासीनता के सामान्य नियम के दुर्लभ अपवाद रहे हैं। जैसा कि 2025 में संयुक्त राष्ट्र महासभा की बहस में पुनः पुष्टि की गई, विश्व अपनी R2P को बनाए रखने के कर्तव्य में विफल हो रहा है। इस बीच, अंतरराष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC) की धीमी गति से चल रही जांचों ने कोई लागू करने योग्य कार्रवाई नहीं की है। फिलिस्तीनी एक दंडात्मक कब्जे वाली शक्ति और एक अंतरराष्ट्रीय समुदाय के बीच फंसे हुए हैं जो नजरें फेर लेता है।

यह चुप्पी दुर्व्यवहार को संभव बनाती है। यह अंतरराष्ट्रीय समुदाय की पिछली विफलताओं को याद दिलाती है—रुआंडा से बोस्निया तक—जहां कानूनी मानदंड स्पष्ट थे, लेकिन उन्हें लागू करने की इच्छा अनुपस्थित थी। इन त्रासदियों की तरह, इज़राइल के नजरबंदी प्रणाली को दी गई छूट एक हिसाब मांगती है।

संरक्षण की प्रवृत्ति: अवैध प्रणालियाँ और मनोवैज्ञानिक ट्रिगर

जब कानून ढह जाता है, प्रवृत्ति हावी हो जाती है। अपने बच्चों की रक्षा करने की इच्छा सबसे शक्तिशाली मानवीय प्रेरणाओं में से एक है, जो विकास द्वारा गहरे में निहित है। **नेचर रिव्यूज़ साइकोलॉजी** (2024) में प्रकाशित शोध से पता चलता है कि माता-पिता का निवेश जैविक रूप से विभिन्न प्रजातियों में उत्तरजीविता रणनीतियों से जुड़ा हुआ है। बच्चों के लिए खतरे गहरे न्यूरोलॉजिकल प्रतिक्रियाओं को ट्रिगर करते हैं—डर, आक्रामकता, हताशा—विशेष रूप से जब ये खतरे निरंतर और अनसुलझे होते हैं।

2023 में **जर्नल ऑफ ट्रॉमैटिक स्ट्रेस** में प्रकाशित एक अध्ययन इस संबंध को और अधिक रेखांकित करता है, यह दर्शाता है कि सामूहिक आघात और असहायता प्रतिक्रियात्मक आक्रामकता को बढ़ाते हैं। HubPages पर लेख “प्रवृत्ति—क्या हम संरक्षण की प्रवृत्ति के साथ पैदा होते हैं?” (2024 में अपडेट किया गया) इसे “माँ भालू” प्रतिक्रिया के साथ तुलना करता है, एक सार्वभौमिक घटना जो सामाजिक और कानूनी मानदंडों को तब पार कर जाती है जब प्रियजन खतरे में होते हैं।

यह वास्तविकता 1997 की फिल्म **एक्जीक्यूटिव टारगेट** में नाटकीय रूप से चित्रित की गई है, जिसमें एक स्टंट ड्राइवर अपनी पत्नी को बंधक बनाए जाने के बाद अपहरण की साजिश में हिस्सा लेने के लिए मजबूर होता है। परिवार के सदस्य के लिए खतरा उसे उन कार्यों के लिए मजबूर करता है जो वह अन्यथा कभी नहीं सोचता। यह कथानक, हालांकि काल्पनिक है, कई फिलिस्तीनी परिवारों की वास्तविकता को दर्शाता है। 9,500 से अधिक व्यक्तियों—बच्चों सहित—हिरासत में हैं, फिलिस्तीनी समुदाय नुकसान, दुर्व्यवहार, और मृत्यु के निरंतर डर में रहते हैं।

ऐसे माहौल में, बदला लेने की इच्छा, बंधकों को बंधकों के साथ बदलने की इच्छा, न केवल तर्कसंगत बल्कि अनिवार्य हो जाती है। 2011 का कैदी आदान-प्रदान—1,027 फिलिस्तीनियों के बदले एक इज़राइली कैदी—ने दिखाया कि गैर-कानूनी दबाव परिणाम देता है। न्याय की अनुपस्थिति में, हताशा एक रणनीति बन जाती है। 7 अक्टूबर 2023 को इस संदर्भ में समझा जाना चाहिए: एक हताश कार्य जो व्यवस्थित नजरबंदी, अंतरराष्ट्रीय परित्याग, और अपने लोगों की रक्षा करने की अत्यधिक प्रवृत्ति से आकार लिया गया था।

चयनात्मक क्रोध का पाखंड

गैर-कानूनी प्रतिक्रियाओं की निंदा करना, उनके उकसाने वाले दुर्व्यवहारों का सामना किए बिना, न केवल पाखंडपूर्ण है—यह खतरनाक है। यह एक दोहरे नैतिक मानक को बनाए रखता है जिसमें राज्य की हिंसा कानूनी और अदृश्य है, जबकि प्रतिक्रियात्मक हिंसा अपराधी और निंदनीय है। यह असंतुलन अंतरराष्ट्रीय कानून की वैधता को ही कमजोर करता है।

तर्क सरल है: यदि न्याय बनाए रखने के लिए जिम्मेदार संस्थान विफल हो जाते हैं, तो लोग अन्य साधन खोज लेंगे। जैसे **एक्जीक्यूटिव टारगेट** का नायक तब अवैध कार्रवाई चुनता है जब कोई और उसकी पत्नी को नहीं बचाता, वैसे ही उत्पीड़ित समुदाय तब कार्य करते हैं जब उनके परिवार निशाना बनते हैं और कोई सुधार का रास्ता नहीं बचता। यह औचित्य नहीं है—यह कारण का निदान है।

इतिहास सिखाता है कि वास्तविक जवाबदेही लक्षणों को नहीं, बल्कि प्रणालियों को लक्षित करती है। नूर्नबर्ग मुकदमे हताश जर्मन नागरिकों को दोष देने से शुरू नहीं हुए; उन्होंने जवाबदेही की संरचनाओं को ध्वस्त किया। फिलिस्तीन में हिंसा के चक्र को समाप्त करने के लिए, अंतरराष्ट्रीय समुदाय को जड़ से निपटना होगा: इज़राइल के व्यवस्थित उल्लंघन और इसके सैन्य-कानूनी तंत्र।

निष्कर्ष: दुर्यवहार समाप्त करें, या हताशा की अपेक्षा करें

इज़राइल का प्रशासकीय नजरबंदी तंत्र, कानूनी बहानों पर निर्मित और हिंसा के माध्यम से कायम, अंतरराष्ट्रीय कानून का एक गंभीर उल्लंघन है। वैश्विक समुदाय की अपनी मानवाधिकार मानकों—R2P या ICC जनादेशों के माध्यम से—लागू करने में निरंतर विफलता ने एक शून्य पैदा किया है जिसमें परिवार की रक्षा की प्रवृत्ति एक राजनीतिक हथियार बन जाती है।

7 अक्टूबर अनिवार्य नहीं था, लेकिन यह अनुमानित था। जब कानूनी प्रणालियाँ ढह जाती हैं, तो सबसे प्राचीन प्रवृत्तियाँ बनी रहती हैं। हताश लोगों की निंदा करने के बजाय शक्तिशालियों की रक्षा करने के बजाय, विश्व को इस संघर्ष के केंद्र में मौजूद संरचनात्मक अन्यायों का सामना करना होगा।

इज़राइल के नजरबंदी शासन को समाप्त करना, अंतरराष्ट्रीय जवाबदेही लागू करना, और कानून में विश्वास बहाल करना न केवल कानूनी आवश्यकताएं हैं—ये भविष्य की हताशा को रोकने का एकमात्र रास्ता हैं। जब तक ऐसा नहीं होता, जवाबदेही की कमी और प्रतिक्रियात्मक हिंसा का चक्र जारी रहेगा, जो डर, आघात, और सबसे महत्वपूर्ण चीज की रक्षा करने की स्थायी प्रवृत्ति से प्रेरित होगा।